कुदेव का स्वरूप

www.JainKosh.org

fppt.com

जो राग-द्वेष मलकरि मलीन, वनिता गदादिजुत चिह्न चीन॥१०॥
ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भवभ्रमण छेव

- जे= जो
- मलकरि मलीन= मैल से मलिन
- वनिता= स्त्री
- गदादि जुत= गदा आदि सहित
- चिह्न चीन= चिह्नों से पहिचाने जाते
- ते= वे
- कुदेव= झूठे देव
- तिनकी= उन कुदेवों की
- जु= जो
- शठ= मूर्ख
- सेव करत= सेवा करते
- तिन= उनका
- भवभ्रमण= संसार में भ्रमण करना न
- छेव= नहीं मिटता

www.JainKosh.org

fppt.com

जो राग-द्वेष मलकरि मलीन, वनिता गदादिजुत चिह्न चीन॥१०॥
ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भवभ्रमण छेव

‘कुदेव’

- रागी-द्वेषी
  - जो राग और द्वेषरूपी मैल से मलिन रागी-द्वेषी हैं और
- चिह्न सहित
  - स्त्री, गदा, आभूषण आदि चिह्नों से जिनको पहिचाना जा सकता है,

अज्ञानी क्या करते हैं?

- ऐसे कुदेवों की सेवा पूजा, भक्ति और विनय करते हैं,

तो अज्ञानी का क्या होता है?

- अनन्तकाल तक उनका भवभ्रमण नहीं मिटता

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेव

रागी द्वेषी

राग- द्वेष के चिह्न सहित

fppt.com

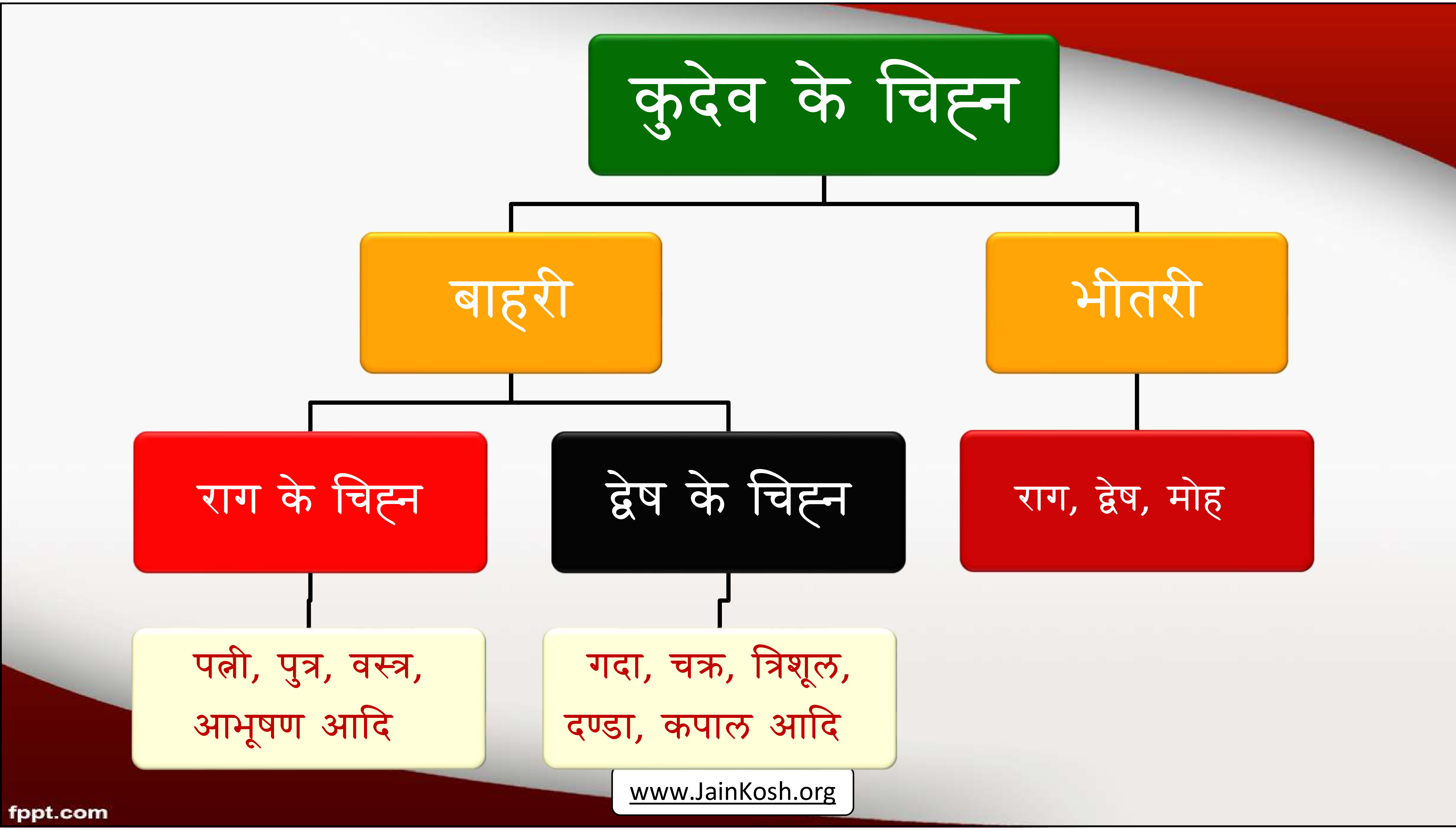
कुदेव के चिह्न
बाहरी
भीतरी
राग के चिह्न
द्वेष के चिह्न
राग, द्वेष, मोह
पत्नी, पुत्र, वस्त्र, आभूषण आदि
गदा, चक्र, त्रिशूल, दण्डा, कपाल आदि
www.JainKosh.org
fppt.com

1) बाहरी चिह्नों से
2) उनके वचनों से
3) उनकी कथाओं से

किसी के भीतर में रागादि हैं, यह कैसे पता चलेगा?

fppt.com

कुदेव के प्रकार

जैनेतर					जैन
देवगति	मनुष्यगति	तिर्यंचगति	काल्पनिक	अजीव पदार्थ	
सूर्य, चंद्रमा, व्यंतर आदि	ओशो, सांई आदि	गाय, साँप, जल, अग्नि, पीपल, बड़	शीतला, दुर्गा, काली, लक्ष्मी, ब्रह्मा, महेश, गणेश	रुपया-पैसा, बाट, तौल, दुकान, मकान, पत्थर, शस्त्र, दवात	

fppt.com

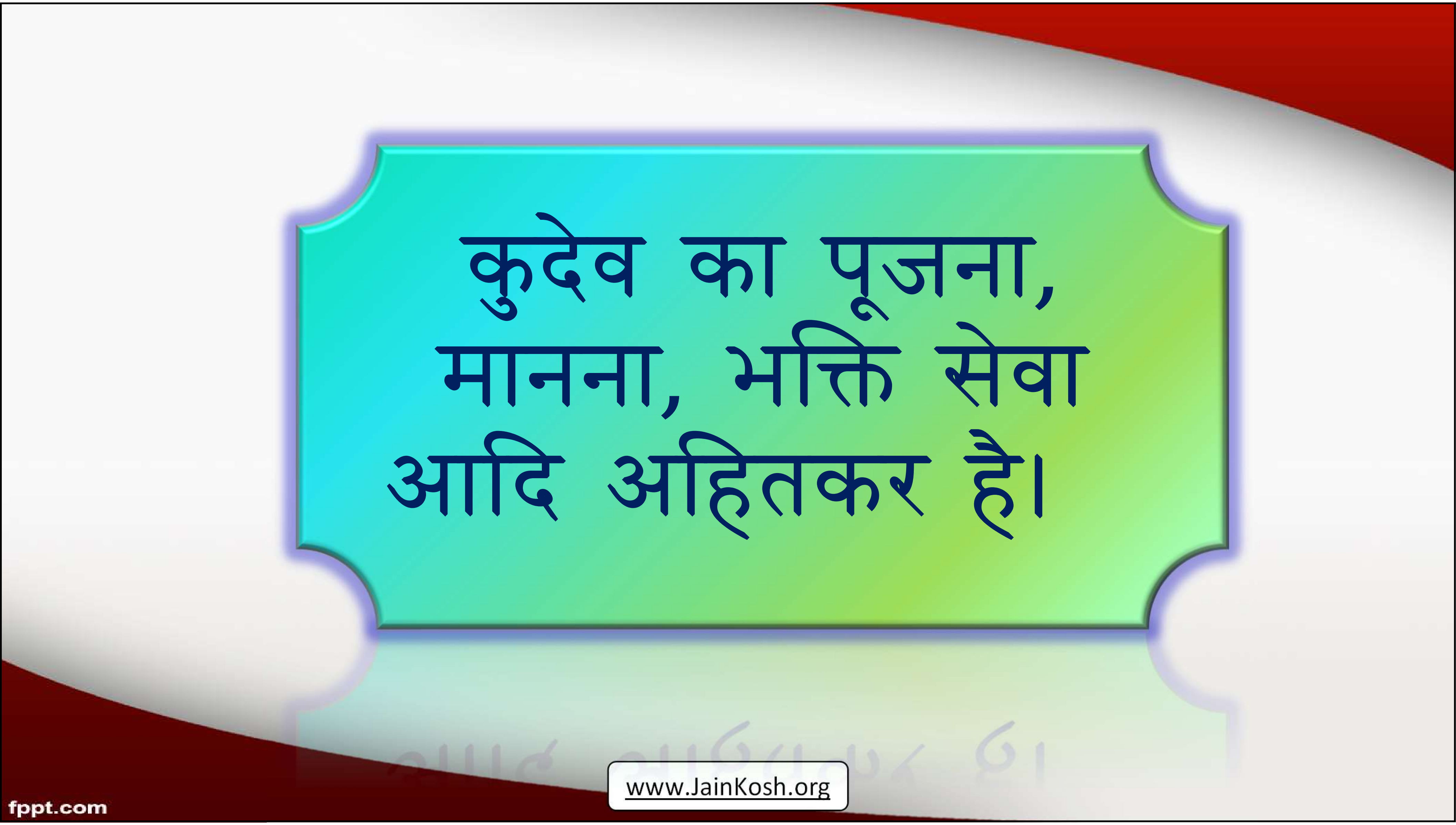
कुदेव का पूजना,
मानना, भक्ति सेवा
आदि अहितकर है।
www.JainKosh.org
fppt.com

भगवान की पूजा आदि क्यों की जाती है?

1. मोक्ष सिद्धि के लिए
2. इस लोक के हित के लिए
3. पर लोक के हित के लिए

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेव की पूजा आदि मोक्ष सिद्धि के कार्य को नहीं करती है, उल्टा उससे दूर करती है।

www.JainKosh.org

fppt.com

इस लोक संबंधी हित

- लौकिक सुखों की प्राप्ति
- आत्मिक सुख की प्राप्ति

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेव की पूजादि से इस लोक संबंधी सुख की प्राप्ति भी नहीं होती।

लौकिक सुख की प्राप्ति पुण्य से होती है।

पुण्य शुभ परिणामों से होता है।

शुभ परिणाम विषय और कषायों की मंदता रूप होते हैं।

fppt.com

कुदेव की पूजा-भक्ति विषय-कषायों की तीव्रता रूप है।

उदाहरण - नवरात्रि, रोजा, गणेश उत्सव, होली, दशहरा, दीपावली आदि

क्या विषय की वृद्धि रूप या कषायों की वृद्धि रूप पूजा-अर्चना से पुण्य प्राप्ति हो सकती है ??

fppt.com

विचारिये कि एक भक्त गणेशजी की स्तुति किस रूप में करेगा ?

सोचिये राम या कृष्ण की स्तुतियाँ किस भांति की होती है।

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेवों से इस लोक संबंधी आत्मिक सुख (शांति) की प्राप्ति भी नहीं होती।

क्योंकि शांति कषायों की मंदता से होती है। पूर्व में कहे अनुसार कुदेवों की पूजन से कषायादिक बढ़ते हैं। अत: शांति की उपलब्धि नहीं होती।

fppt.com

कुछ लोग दया, संतोष आदि के द्वारा शांत परिणामी देखे जाते हैं?

वहाँ भी वे शांत कुछ कुदेव के कारण नहीं है। स्वयं के परिणामों में विषय एवं कषायों की मंदता से हैं।

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेव की पूजा दु:खों के भय से करते हैं ?

- दुखों के कारणों का विचार करते हैं:
  - ➢दुख की प्राप्ति पाप उदय से होती है।
  - ➢पाप का उदय पाप कमाने से होता है।
  - ➢पाप विषय-कषाय की तीव्रता रूप भावों से होता है।
  - ➢कुदेव की पूजा विषय-कषाय का तीव्रता वाले भावों से है।
- अत: कुदेव पूजा से तो उल्टा दुख बढ़ने वाले हैं। यदि दुखों से भय हो, तो पुण्य अर्जन रूप अरहंतादि की भक्ति करो।

fppt.com

विचारिये किसी ने पाप कार्य किया है, तो क्या कोई व्यक्ति उसे पाप के फल से बचा देगा ?

यदि ऐसा हो, तो पुण्य-पाप की व्यवस्था ही बेकार होगी।

अत: हमारे स्वयं के पाप उदय के बिना कोई हमारा बिगाड़ नहीं कर सकता - ऐसा निश्चय करके व्यर्थ के भय से कुदेव को नहीं मानना चाहिए

fppt.com

पाप का उदय होगा, तब तो कुदेव बुरा करेगा। उसकी पूजा करने से वह दुख दूर हो जाएगा ?

1) पाप का उदय होने पर भी पाप ही बुरा करने वाला है, कुदेव नहीं।

2) उस बुरा को दूर करने का उपाय पुण्य प्राप्ति है, जो कि कुदेव सेवा से नहीं होती। बल्कि उससे पाप-वृद्धि होने से दु:ख बढ़ता है।

3) पुण्य प्राप्ति का उपाय वीतरागता की आराधना है।

www.JainKosh.org

fppt.com

लेकिन कल्पित कुदेवों का चमत्कार तो देखा जाता है ?

वह चमत्कार कुछ कल्पित देवों का नहीं, उनके मानने वाले व्यंतरादिक का है।

जैसे जिनप्रतिमा का कोई चमत्कार दिखता है, तो कोई जिनेन्द्र भगवान ने वह चमत्कार नहीं किया है। उनके मानने वाले देवादि ने किया है।

fppt.com

वे व्यन्तरादिक चमत्कार, शक्ति आदि सहित होते हैं, तो उनके मानने-पूजने में क्या दोष है ?

अपने पाप का उदय होने से सुख नहीं दे सकते, पुण्य का उदय होने से दुख नहीं दे सकते

उनके पूजने से पुण्य बन्ध नहीं होता, उनका पूजन राग-मोहादि की वृद्धि वाला होने से पाप ही होता है।

अतः उनका मानना-पूजना कार्यकारी नहीं है, उल्टा बुरा करने वाला है।

www.JainKosh.org

fppt.com

व्यंतरादि अपने को पूजवाते हैं ?

उन्हीं से पूजवाते हैं, जो उनको मानते हैं, जो नहीं मानते, उनसे कुछ नहीं कहते-करते।

www.JainKosh.org

fppt.com

सूर्य पूजन

सूर्य कोई भगवान नहीं है, जिसे पूजा जाये अथवा अर्घ्य चढ़ाया जाय।

चंद्रमा पूजन

* कोई धनप्राप्ति के लिए चंद्रमा पूजा करता है, परन्तु उससे तो धन प्राप्ति होती नहीं।
* चंद्रमा भी भगवान नहीं, उसका अंश भी नहीं।

www.JainKosh.org

fppt.com

ग्रहों का पूजन

- ग्रह कोई जीव को दु:खी नहीं करता।
- ग्रह पूजन से ग्रह स्थिति नहीं बदल जाती।
- ग्रह आगामी ज्ञान का कारण मात्र होता है, दुख को उत्पन्न नहीं करता।
- ग्रह तो स्वयं अजीव विमान हैं, उनकी पूजा से पुण्य प्राप्ति भी नहीं है।

www.JainKosh.org

fppt.com

तो फिर ग्रह शांति के लिए क्या करें ?

पुण्य उत्पन्न करने वाली जिनेन्द्र भगवान की भक्ति, पूजन, संयम-धारण आदि कार्यों से शांति होती है। वे कार्य करें।

fppt.com

जैन नवग्रह जिनालय जाना या नहीं?

नवग्रह जिनालय जहाँ अरिहंत भगवान की प्रतिमा विराजमान है, वहां जाने और भगवान की पूजा-भक्ति आदि करने में कोई गलत बात नहीं है|

लेकिन वहां यह भगवान इस ग्रह के उपद्रव शांत करते है, यह भगवान इस उपद्रव के रोग शांत करते हैं – ऐसा मानकर उनकी आराधना करें, यह मिथ्या विचार है |

www.JainKosh.org

क्षेत्रपाल, पद्मावती आदि जैन देवी-देवता का तो पूजन कर सकते हैं ?

(1) संयम से पूज्यपना होता है, देवों में संयम पाया नहीं जाता। इन देवों के संयम नहीं होने से पूज्यपना नहीं बनता।

(2) सम्यक्त्व के कारण पूज्य मानो, तो जो नियम से सम्यग्दृष्टि हैं ऐसे सर्वार्थसिद्धि के देव, लौकांतिक देव उन्हें ही क्यों न पूजें !!!

दूसरा इनके सम्यग्दर्शन के होने का भी कोई नियम नहीं है। बल्कि इनका क्षेत्रपाल आदि बनना ही इनके मिथ्यादर्शन सहित जन्म को बताता है क्योंकि सम्यग्दृष्टि भवनत्रिक में पैदा नहीं होते, देवी भी नहीं बनते ।

fppt.com

इनके भक्ति अधिक पायी जाती है, इसलिए इनको पूजते हैं ?

- कोई भक्ति अधिक करता है, इतने मात्र से पूजनीय नहीं हो जाता।
- यदि भक्ति से महान मानो, तो सौधर्म इंद्र की भक्ति अधिक है, उसकी पूजा करो!!

www.JainKosh.org

fppt.com

जैसे राजा के प्रतिहारी हैं, वैसे भगवान के ये हैं। अतः जैसे राजा से मिलने के लिए द्वारपाल को भेंट देते हैं, वैसे ही भगवान से मिलने हेतु इनको पूजते हैं?

राजा से मिलने के लिए प्रतिहारी को चढ़ावा देना–यह एक भ्रष्ट परम्परा है। यहाँ धर्म क्षेत्र में भी इस प्रकार का भ्रष्टाचार करोगे, तो पुण्य व धर्म उपलब्धि तो नहीं हो सकती।

यदि ऐसी व्यवस्था मान भी लें, तब भी तो प्रतिहारी को ही चढ़ावा चढ़ाओगे। ये तो प्रतिहारी भी नहीं है। समवशरण में भी कुबेर की व्यवस्था है। अत: ऐसा मानकर भी कैसे पूजें।

इनको प्रतिहारी मान भी लो, तो क्या ये भगवान से मिलाते हैं ? क्या ये मंदिर ले जाते हैं? नहीं पूजने पर रोक देते हैं या भगा देते हैं? क्या करते हैं !!! जिसकी भक्ति होती है, वह भगवान के दर्शन प्राप्त करता है। कुछ इनके अधीन नहीं है।

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेव पूजन से कुछ लाभ नहीं है, पर कुछ नुकसान भी तो नहीं है ?

नुकसान है, तभी आगम में इतना निषेध किया है।

इनके पूजने से

1. मिथ्यात्वादि भाव दृढ़ होने से मोक्षमार्ग दुर्लभ हो जाता है।
2. पापबंध होने से आगामी दुख मिलते हैं।

fppt.com

कुदेव मानने में मिथ्यात्व क्यों ?

इष्ट-अनिष्ट बुद्धि की पोषक होने से

राग-द्वेष को भला मानने को support करने से

सच्चे देव को यथार्थ न मानने से

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेव मानने में पापबंध क्यों ?

1. (1) कुंदकुंद आचार्य: प्रवचनसार: गाथा 258

 जदि ते विसय कसाया, पाव त्ति परुविदा व सत्थेसु।

 किह ते तप्पडिबद्धा, पुरिसा णित्थारगा होंति।।

 अर्थ: जब शास्त्रों में विषय व कषायों को पाप बताया है, तब उनमें लीन पुरुष व उनकी सेवादि जीवों को कैसे तार सकेगी अर्थात् नहीं तारती।

1. जो परमार्थ नहीं जानते ऐसे देवों-पुरुषों की सेवा-भक्ति कुदेवपने व कुमनुष्यपने को प्राप्त कराती है। (गाथा 256-257)
2. इनकी सेवा मोह-द्वेष एवं अप्रशस्त राग रूप होने से पाप बंध होता है।

www.JainKosh.org

fppt.com

क्या ये तीव्र मोह नहीं है?

- लोक में अपने से हीन व्यक्ति को नमस्कार आदि करने में inferiority (हीन भाव) महसूस करते हैं। यहाँ ये सब कुदेव (तिर्यंच, मनुष्य, देव, अजीव आदि) अपने से हीन हैं, उन्हें पूजने-वंदने में अपने को हीन नहीं मानते। ये बड़ा मिथ्यात्व है।
- लोक में जिससे प्रयोजन सिद्ध हो, उसी की सेवा करते हैं। और यहाँ कुदेवों से कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होने पर भी बिना विचारे उनकी सेवा करते हैं - यह बड़ी मोह दशा है।

fppt.com

अतः कुदेव का मानना, पूजन, भक्ति, भय आदि छोड़कर सुदेव की भक्ति करना चाहिए

www.JainKosh.org

fppt.com

सच्चा देव

वीतरागी + सर्वज्ञ + हितोपदेशी = देव

fppt.com

- भक्तामर का पाठ करना
- शीतलनाथ भगवान की पूजा करना
- रविवार को पार्श्वनाथ भगवान की पूजा करना
- शनिवार को मुनिसुव्रतनाथ भगवान की पूजा करना
- तिजाराजी क्षेत्र पर दर्शन करने जाना, इत्यादि

- मिथ्यात्व नहीं है, लेकिन .....

www.JainKosh.org
fppt.com

ये अज्ञान ही है!

- ग्रहों की शान्ति के लिये भक्तामरजी का पाठ करना
- भगवान से ग्रहशान्ति की आकांक्षा से उनकी नवग्रह पूजा करना
- शीतलनाथ भगवान को चेचक का रोग ठीक करने वाला मानना
- रविवार को ही पार्श्वनाथ भगवान की पूजा करने से हमारी मनोकामना पूरी हो जायेगी

www.JainKosh.org

fppt.com

True / False

- जो हमारी मनोकामना पूरी कर दे, वह देव है ।
- जो हमारी पूजा से प्रसन्न हो जाये, वह देव है ।
- जो exam में pass करा दे, वह देव है ।
- जिससे हमें हमेशा डर लगा रहे, वह देव है ।
- जिससे हमें संसार से छूटने का रास्ता मिले, वह देव है ।

fppt.com